

ASHA ARCHIVES

1.812

I

श्री १८१२

ASHA ARCHIVES

1.812	I
गुजराती भाषा	

गुजराती भाषा

गुजराती भाषा

वृद्धावासाः ॥ ५ ॥ याथासाकारं दिहि कुत्रयुः गच्छीतु या
रग्वतीशुजायां किंतिथेश्वसिः ॥ ३ ॥ दिक्तालीति शिवाय ॥ ४ ॥
सिद्धिकवात्यानां शिथयायादायवर्गाय नमः ॥ ५ ॥
यूरगधीयुक्तालीति ॥ ६ ॥ यामूलावायवर्गाय नमः ॥ ७ ॥
वृत्तान्यादिषु किं ॥ ८ ॥ सूक्ष्माहत्वासूक्ष्माय धनं ॥ ९ ॥
तिष्ठतु डाकुसामवस्यानूरुवसूखयर्दका नमः ॥ १० ॥

वसावाकवति नमः मिमांसावयका तथा च ॥ ११ ॥
रुतिसूत्रगद्यार्थिनिष्ठा युदानयस्यागाहनन ॥ १२ ॥
वृत्तस्य गर्त्ताकां मातायां कवातिन कृतम ॥ १३ ॥
खदाभं वत्तकूर्मं धनं वयिदधनीं युक्तालीति ॥ १४ ॥
अद्य नवविमर्शगद्यतिरुक्ता निवाकावा ॥ १५ ॥
नृणां विवायिह नृणां नयसमयया ॥ १६ ॥

जगन्नाथानि निहृयी ॥ ७० ॥ नमस्तुभ्यं श्रीगणेशाय नमः ॥
 विविदिस्ते वीरकुञ्जना ननर ॥ ७१ ॥ नमस्तुभ्यं श्रीगणेशाय नमः ॥
 ननधम्मजिणमग्निर्जनामस्यामा ॥ ७२ ॥ नमस्तुभ्यं श्रीगणेशाय नमः ॥ ७३ ॥
 ॥ दयमानित्वमसितसूत्रात्कजसत्त्व ॥ ७४ ॥ नमस्तुभ्यं श्रीगणेशाय नमः ॥ ७५ ॥
 गनत्वंदिगस्तंयकाल ॥ ७६ ॥ आत्मायित्वमसितसूत्रात्कजसत्त्व ॥ ७७ ॥
 भव्यात्मास्तंयक्रिनिधवस्तंनन्किनासियस्तं ॥ ७८ ॥ निश्चिद्य

आविकृमिव हिता निर्विकारा निवाहा निर्यातुवा निदमस न न्निययं
 यादिशक्तिः। माया। मीता। मृगयदमयी वंदव दानव गालवायि न्ययि
 यवनिवासासना नन्दवूया ॥ १२ ॥ कवालि कवता निरधटिकटनूयि
 विजाम विगिलाकाजन निरुमा। मृगमया न्नियन्दिनि। हवानक
 मुखिस्कृन्म निरुज्जु सदीयिक सदीयनिक न्नियन्दिनि विगला
 हिनिगहिमा ॥ १३ ॥ कवालि कवता निरधटिकटनूयि

मृजानविः ॥ १८ ॥ सुवर्णकालिका महिमा महिमा यव सुन्दरिय
जिनद विक्रव वावू सकल श्रव लय निव निव नव क्रमा ॥ १४ ॥ उयस्य दे
युवा रत्न न्यायमीमा स्याच्छ्रुमय द निगमा के यरु मा ॥ १५ ॥ भव नव स
सुमहिमानं व कि द व नि ग सु कु उ म नि न रु म न नै व व रु स म थ ॥ १६ ॥
॥ १७ ॥ सुत्र न व मू नि स थो स वि न या द य द्य सकल क लू य वृ न्द ध्व सक
हा य दायि । द द य स व सि नि ह्य वा रु ना मा म की थ कि उ व न न ल म र थ

त्वा मृ न र न्या न जान ॥ १३ ॥ उक्ता मू खिल लज्जि क्क था व वा व रु ग यि
था । म्म दान वा सि नियु न्द व मा स यि थ र न थ ॥ १८ ॥ अ व थ वा वि ति
नि व क ल द य म यी ध्व न । नि वा वू य ध व द वी उ द्ध न नि न भा र ॥ १९ ॥
द द व रु म हा था व स य वि न कि ल व न । व उ द्ध य वा न रु क य यु द्ध वा
नि न मा रु न ॥ २० ॥ न म म्भु र्य म हा वा व ज ग हा नि वि का लि क । म र्व
सि द्धिय द नि दि वि क वा नि न मा रु न ॥ २० ॥ मा न कि क कू ट व दि

Guliyakāsi
Kholā

1.8/2	I
गुलियकसी	

ASHA ARCHIVES

Guliyakali
Kotol-ai

ASHA ARCHIVES

1.8/12

I

गुलियाकाली
कोटोल-आ

महाभारतविवेकगुरुय ॥ यश्च विंशतिरिह ॥ ध्यायेत्पुनः कालीं त्रिमास्यदि ॥
कृत्वा कृत्वा कृत्वा जातः प्रविशति विष्णुं हिता ॥ यो न विदुः यत्नं न स्मादवस्तु
यत्नमशुभं वा ॥ यं विदुः यत्नं न स्मादवस्तु ॥ यो न विदुः यत्नं न स्मादवस्तु
हं न स्मात्वा ॥ यत्नं न स्मादवस्तु ॥ यो न विदुः यत्नं न स्मादवस्तु
न ॥ मुक्तिं कामं मुक्तं न मुक्तिं न स्मात्वा ॥ यो न विदुः यत्नं न स्मादवस्तु
युक्तं कालं विदुः न स्मात्वा ॥ यो न विदुः यत्नं न स्मादवस्तु ॥

॥ नृपतिराकाशसंस्थितः ॥ यो न विदुः यत्नं न स्मात्वा ॥ यो न विदुः यत्नं न स्मादवस्तु
विधिं स्मार्त्तं समाकृतं ॥ ७८ ॥ ॥ यो न विदुः यत्नं न स्मात्वा ॥ यो न विदुः यत्नं न स्मादवस्तु
विधिं धर्ममाकृतं यत्नं न स्मात्वा ॥ यो न विदुः यत्नं न स्मादवस्तु ॥ यो न विदुः यत्नं न स्मादवस्तु
नंदरिसदा गृहधर्मकामार्थसंयत्तिं ॥ यो न विदुः यत्नं न स्मात्वा ॥ यो न विदुः यत्नं न स्मादवस्तु
कृतमार्गं यत्नं न स्मात्वा ॥ यो न विदुः यत्नं न स्मादवस्तु ॥ यो न विदुः यत्नं न स्मादवस्तु
संस्थितं ॥ यत्नं न स्मात्वा ॥ यो न विदुः यत्नं न स्मादवस्तु ॥ यो न विदुः यत्नं न स्मादवस्तु

यानि सदा वसुतवा न्धवा यिवत्वं सानिर्गतस्य त्राम् अमां समुद्व ॥ गुरु
नियव्ययत्वस्य यागिनी रुव विगत्वा यानि न्यागमनकादो याग किष्कृष
नेया ॥ कुरुमात्तनयू या निन्दा सानिन्दा नवका लि ॥ त्वं निन्दा का लि नां गः
सुत्वं मवयव भव्य वि ॥ नवटं नरुया दानं नावका सादि क्व ॥ या शुभय
वादि कृष्णादि न किं वि त्मानया म्भ हं ॥ किन्तु त्वत्तव तां हा दं सर्वां जान वि
वा ॥ या ॥ वि जाज्ञां कूर्वका द वि निन्दा यि ह ह ताम म ॥ कूर्वका भवत्तद

व्राध निवय तनर्न कर्तुं ॥ त्वं या ज्ञान वि दिग्वा ॥ कूर्विन वि दिग्वा म कि ॥
वाय कस्य य निष्ठा व स ॥ कस्य म्भ दा लि वा ॥ यदुत्वं नस्य सा प धा य स्य त्वं
मसु काय वि धन्या हं कृत् कृत्वा हं स ह्वं जी विर्न म म ॥ यस्य त्वत्तव तां हा
क मना नि विग न सदा ॥ पुष्प काली निव या द्वा म मी ह दय म म ॥ कर्णं सि
दि क गाली च त्र गु था र ग ध्व गी दि र्यी ॥ व गु का या लि नी वा द्वा या दो दो मू गु
मालिनी ॥ मू ह हा म्भ गी व क्क काल च क्क ध्व गी न न ॥ या द्वा द र्म म हा

काशी सर्वमर्मा निवृत्ति का ॥ ब्रह्म काया विनी सर्वानि वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

नमस्तु भिजगम्मा नमस्तु भिजगम्मा नमस्तु भिजगम्मा नमस्तु भिजगम्मा नमस्तु भिजगम्मा

॥ काशी सर्वमर्मा निवृत्ति का ॥ ब्रह्म काया विनी सर्वानि वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॥

॥ काशी सर्वमर्मा निवृत्ति का ॥ ब्रह्म काया विनी सर्वानि वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॥